अध्ययन सामग्री

बी. ए. पार्ट 3

प्रश्नपत्र - षष्ठ

डॉ० मालविका तिवारी

सहायक प्राचार्य

संस्कृत विभाग

एच. डी. जैन कॉलेज

आरा (वी.कुं.सिं. वि०)

23.05.20

1) प्रातिपदिक

यह संज्ञा सूत्र है। सूत्र है – 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्'।

शब्दार्थ है – (अधातुः) धातु भिन्न और (अप्रत्ययः) प्रत्यय भिन्न (अर्थवद्) अर्थवान् (प्रातिपदिकम्) प्रातिपदिक संज्ञक होता है।

प्रत्यय से 'प्रत्यय' और 'प्रत्ययान्त' – इन दोनों का ही ग्रहण होता है। अर्थवत् (अर्थवान्) का अर्थ है – जिसका कुछ अर्थ हो अर्थात् सार्थक।

सूत्र का भावार्थ होगा – धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़कर अन्य अर्थवान् (सार्थक) शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

दूसरे शब्दों में, प्रातिपदिक संज्ञा के लिए चार बातें आवश्यक हैं –

1) जिस शब्द का कुछ-न-कुछ अर्थ हो, वही प्रातिपदिक हो सकता है। इस प्रकार निरर्थक शब्दों की प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होगी।

2) किन्तु वह अर्थवान् शब्द 'धातु' नहीं होना चाहिए। यह सूत्र का निषेधात्मक पक्ष है। इसके कहने से 'अपठत्' की प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होती, क्योंकि वह 'पठ्' धातु का लङ् लकार का रूप है।

3) उस अर्थवान् शब्द को प्रत्यय भी नहीं होना चाहिए। इस

Scanned by CamScanner

इस कथन से 'रामेषु' और 'पठसि' आदि स्थलों पर 'सुप्' तथा 'सिप्' आदि प्रत्ययों की प्रातिपदिक संज्ञा न होगी।

4) तथा वह अर्थवान् शब्द प्रत्ययान्त भी नहीं होना चाहिए — इस व्यवस्था से 'रामेषु' — इस प्रत्ययान्त समुदाय की प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होती। यदि प्रत्ययान्त की प्रातिपदिक संज्ञा होती तो 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से 'सु' का लोप हो जाता जो कि अभीष्ट नहीं है।

इस प्रकार अर्थवान् होना तो प्रातिपदिक की मुख्य विशेषता है, किन्तु वह अर्थवान् शब्द धातु, प्रत्यय या प्रत्ययान्त नहीं होना चाहिए। ये सभी विशेषताएँ हमें 'राम' शब्द में मिलती हैं।

'राम' शब्द न तो धातु है, न प्रत्यय और न प्रत्ययान्त ही। साथ ही यह शब्द अर्थवान् भी है क्योंकि 'राम' शब्द का अर्थ है — दशरथ का पुत्र आदि। इस प्रकार 'राम' प्रातिपदिक संज्ञक होगा।

इस सूत्र के विषय में एक बहुत रोचक सुभाषित प्रसिद्ध है जिसमें चार प्रश्न किये गये हैं और उनके उत्तर के रूप में इस सूत्र के चार पद क्रमशः उपस्थित किये जाते हैं।

सूक्ति — 'विद्वान् कीदृग् क्वो ब्रूते? को रोगी? कश्च नास्तिकः?
कीदृक् चन्द्रं न पश्यन्ति? सूत्रं तत्पाणिनेर्वद॥'

अर्थात् विद्वान् कैसे वचन बोलता है? कौन नास्तिक है? कैसा चन्द्रमा लोग नहीं देखते? इनका उत्तर पाणिनि का जो सूत्र है, उसे कहो।

पाणिनि का वह सूत्र यही 'अर्थवत्' सूत्र है। इसके चार पद उक्त चार प्रश्नों के क्रमशः उत्तर हैं।

	प्रश्न	उत्तर
1)	विद्वान् कीदृग् क्वो ब्रूते? विद्वान् कैसा वचन बोलता है?	अर्थवत् सार्थक (वचन बोलता है)
2)	कश्च नास्तिकः? कौन नास्तिक है	अप्रत्ययः अप्रत्ययवाला (विश्वास से

Scanned by CamScanner

प्रश्न	उत्तर
	रहित) नास्तिक होता है।
3) को रोगी कौन रोगी है	अधातुः अधातु (बलरहित) मनुष्य रोगी होता है।
4) कीदृक् चन्द्रं न पश्यन्ति कैसा चन्द्रमा लोग नहीं देखते	प्रातिपदिकम् – (प्रातिपदिक) प्रतिपदा के चन्द्रमा को लोग नहीं देख पाते

कृत् प्रत्ययान्त, तद्धितयुक्त और समास की भी प्रातिपदिक संज्ञा होती है। उदाहरण - पाचक, औपगव, राजपुरुष
कृत् प्रत्ययान्त और तद्धितयुक्त की प्रत्ययान्त होने से पूर्वसूत्र (अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्) से प्रातिपदिक संज्ञा प्राप्त नहीं थी, इसलिए इस सूत्र 'कृत्तद्धितसमासाश्च' का विधान किया गया। इससे कृत् और तद्धित प्रत्ययान्त भी प्रातिपदिक संज्ञक हो जाते हैं (पाचक, कारक आदि कृदन्त, औपगव आदि तद्धितान्त)
इस सूत्र में 'समास' का कथन अलग से क्यों करना पड़ा? इसके उत्तर में वैयाकरण कहते हैं कि यहाँ समास का ग्रहण नियमार्थ है।
अभिप्राय यह है कि जहाँ अनेक पदों के समूह की प्रातिपदिक संज्ञा हो तो वहाँ समास की ही प्रातिपदिक संज्ञा की जावे, अन्य प्रकार के समूहों की नहीं।
इस नियम को एक श्लोक में बहुत उत्तम रूप से कहा गया है –

'यत्रार्थवति संघाते पूर्वो भागस्तथोत्तरः।
स्वातन्त्र्येण प्रयोगार्हः समासस्यैव तस्य चेत्॥

अर्थात् जिस अर्थवान् शब्दसमुदाय के पूर्व तथा उत्तर दोनों भाग स्वतन्त्र रूप से प्रयोग के योग्य हों, उसकी यदि प्रातिपदिक संज्ञा हो तो समास की ही हो, अन्य की नहीं।

Scanned by CamScanner

इस नियम से 'राजपुरुष' आदि समस्त पदों की तो प्रातिपदिक संज्ञा होगी, किन्तु राज्ञः पुरुषः आदि वाक्यों की नहीं।

2/ सर्वनामस्थान

सूत्र है - सुडनपुंसकस्य

शब्दार्थ है - (अनपुंसकस्य) नपुंसक से भिन्न अन्य लिङ्ग का (सुट्) सुट् प्रत्याहार।

किन्तु इससे सूत्रार्थ स्पष्ट नहीं होता। इसके स्पष्टीकरण के लिए 'शि सर्वनामस्थानम्' से 'सर्वनामस्थान' की अनुवृत्ति करनी होगी।

सुट् प्रत्याहार है और इसमें सु, औ, जस्, अम् और औट् इन पाँच प्रत्ययों का समाहार होता है।

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा -

सु आदि ये पाँच प्रत्यय जब पुल्लिंग या स्त्रीलिंग से परे होते हैं तो इनकी सर्वनाम संज्ञा होती है।

अर्थात् पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्दों के आगे लगनेवाले सुट् - सु, औ, जस्, अम् और औट् विभक्ति प्रत्यय 'सर्वनामस्थान' कहलाते हैं।

3/ अपृक्त

यह संज्ञा सूत्र है। 'सूत्र है - 'अपृक्तम् एकाल् प्रत्ययः'

इसका अर्थ है - (एकाल्) एक अल् अर्थात् एक वर्ण वाला (प्रत्ययः) प्रत्यय (अपृक्त) अपृक्त संज्ञक है।

भाव यह है कि जो प्रत्यय एकवर्णरूप वाला है अथवा एकवर्णरूप हो गया है, उसकी 'अपृक्त संज्ञा' होती है।

उदाहरण - 'सरवान + स्' में 'स्' प्रत्यय है और साथ ही एक वर्णवाला भी है, अतः इसकी 'अपृक्त संज्ञा' होगी।

(सु का स्, ति का त्, सि का स् - एक अल् कहलाता है)

Scanned by CamScanner